
गोयल
कॉमिक्स
संख्या 129 मूल्य 6-00
कनकटी
जादूगरनी
Scan & editing
by
Rahul Dubey



प्रकाशक : गोयल पॉकेट बुक्स ७१, बापू मार्किट, दिल्ली-6-


अचानक आकाश में काले बादल छा गये और बिजली चमकने लगी –
कड़ड़ड़ड़
मैं आज बिना शिकार के महल नहीं लौटूंगा।
मूसलाधार बारिश शुरु हो गई। पानी से बचने के लिये राजा रूद्र प्रताप एक पेड़ के नीचे आकर खड़ा हो गया –
दूर खड़ी एक राक्षसी की नजर राजा रूद्र प्रताप पर पड़ी।
अरे! यह तो राजा रूद्र प्रताप है। इस वक्त जंगल में क्या कर रहा है?
वाह! राजा को अपने वश में करने का यह अच्छा मौका है। यदि राजा मेरे जाल में फंस गया तो मैं रानी बन कर राज करूंगी।


राक्षसी रूप बदल कर सुन्दर युवती बन गई -
और फिर -
बू हू हू !
अरे! यह तो किसी औरत के रोने की आवाज है, इस घने जंगल में कौन हो सकती है ?
कौन हो तुम ? सामने आओ!
कौन हो तुम ?
मैं असहाय और दुखी औरत हूँ महाराज। मेरा नाम चन्द्रमुखी है।



क्या तुम्हारे माता-पिता नहीं हैं चन्द्र मुखी?
पिता थे महाराज। कल रात जब मैं अपने पिता के साथ इस घने जंगल से गुजर रही थी...
...एक शेर ने मेरे पिता पर आक्रमण कर दिया और उन्हें मार डाला...
...मैं अभागिन जिन्दा बच गई। मेरा अब कोई भी नहीं है महाराज बू...हू...हू...हू....
हमें तुम्हारे पिता की मृत्यु का बहुत अफसोस है। तुम रोओ मत, मैं अपने साथ तुम्हे महल में ले चलूंगा।
बारिश रुकने के पश्चात राजा रुद्रप्रताप चन्द्रमुखी को घोड़े पर बिठा कर महल की ओर लौट पड़े-
राज महल में-
चन्द्रमुखी! आज से तुम इस महल में मेरी मेहमान बन कर रहोगी।
लेकिन महाराज.... मैं...


इन्कार मत करो चन्द्रमुखी ! हम तुम्हें अपने साथ लाए हैं। हमें राजा का फर्ज निभाने दो।
जैसी आपकी इच्छा महाराज।
राक्षसी के मन की मुराद पूरी हो गई-
मैं महल में तो पहुँच गई। अब राजा को वश में करने का उपाय सोचती हूँ।
आहा, रानी रूपमति ! राजा रूद्र-प्रताप की पटरानी बनने के लिये मुझे तेरे से ही शुरूआत करनी होगी।
राक्षसी अपना रूप बदल कर --...


...उसी रात अस्तबल में पहुँची–
ही..ही..ही... बहुत जोर की भूख लगी है मुझे ।
ही ही ही
खच
राक्षसी ने एक घोड़े को शहीद कर डाला–....
कचर
कचर
कचर
... और उसकी हड्डियों को रानी रूपमति के कक्ष में फेंक कर...
रानी रूपमति। यह तेरे अन्त की शुरुआत है ।
...चन्द्रमुखी बनी और अपने कक्ष में आ लेटी–
खर्र...खर्र...


राक्षसी का अब रोज रात का यही क्रम बन गया था –
घोडे का मांस बहुत स्वादिष्ट है।
कचर
कचर
धप
इधर रोज अपने कक्ष में हड्डियाँ देख कर रानी रूपमति परेशान हो गई –
पहरेदार। हमारे कक्ष में यह जानवरों की हड्डियाँ कौन फेंक कर जाता है?
मालूम नहीं महारानी जी। हम जागते रहते हैं, लेकिन हमें कोई नज़र नहीं आता।
मेरे कक्ष पर कड़ी नजर रखो। जो भी मेरे कक्ष में हड्डियाँ फेंके उसे गिरफ्तार कर लो।
अच्छा महारानी जी।
उधर अस्तबल में घोड़े कम होते जा रहे थे –
ही...ही...ही... मुझे भूख लगी है ....
एक दिन राजा रुद्रप्रताप टहलते हुए चन्द्रमुखी के कक्ष में आए –
कैसी हो तुम चन्द्रमुखी? यहां मन तो लग रहा है न तुम्हारा?
महल में मेरे लिये सुख-सुविधा के सारे साधन मौजूद है महाराज... लेकिन....


निश्ंकोच कहो चन्द्र मुखी, क्या कहना चाहती हो ?
मेरा मन बहुत घबरा रहा है महाराज। कहीं आपकी रानी मुझे भी ना खा जाये।
क्या कह रही हो चन्द्र-मुखी, हमारी रानी पर इल्जाम लगाना मौत को बुलाना है।
जानती हूँ मैं। लेकिन मैं झूठ नहीं बोल रही हूँ, मुझे तो वह रानी के रूप में कोई राक्षसी लगती है।
हम अपनी आँखो से देखकर ही यकीन करेंगे चन्द्रमुखी। यदि तुम्हारी बात गलत हुई तो हम तुम्हें मृत्युदण्ड दे देंगे।
रात के तीसरे पहर में—
क्या तुम तैयार हो चन्द्र मुखी?
हाँ महाराज! मैं आपकी ही राह देख रही थी। चलिये।
दोनों दबे पांव रानी रूपमति के कक्ष की तरफ बढ़ने लगे—
रानी के कक्ष की खिड़की के पास पहुँच कर—
देख लीजिये महाराज। रानी जी के कक्ष में ज़ानवरों की हड्डियाँ बिखरी पड़ी हैं।
ओह! तुम्हारा कहना सच साबित हुआ चन्द्रमुखी।


महाराज! आप अपने अस्त-बल में घोड़ो की गिनती करवाईये।
ठीक है। मैं कल सुबह ही पता लगवाऊंगा।
दूसरे दिन–
महामन्त्री जी। हमारे अस्तबल में कितने घोड़े हैं?
हमारे अस्तबल में एक हजार घोड़े हैं महाराज।
आप पता करें! इस वक्त वहां कितने घोड़े हैं।
महामन्त्री ने स्वयं अस्तबल में जाकर घोडो की गिनती करी–
अरे! यहां तो आठ सौ अस्सी ही घोड़े हैं, बाकी कहां गये?
राजदरबार में–
महाराज! अस्तबल में एक सौ बीस घोड़े कम हैं।
ओह! चन्द्रमुखी का सन्देह ठीक है। हमारी रानी अस्तबल से एक सौ बीस घोड़े मार कर खा गई।


ऐसा नहीं हो सकता महाराज। आपको अवश्य ही धोखा हुआ है।
नहीं महामन्त्री जी। मैंने अपनी आँखो से रूपमति के कक्ष में जानवरों की हड्डियाँ देखी हैं। रूपमति राक्षसी है।
भला रानीजी को महल में किस चीज की कमी है और फिर आपके विवाह को वर्षों बीत गये; आज तक ऐसी घटना नहीं घटी।
क्या तुम्हे अपने राजा पर विश्वास नहीं रहा महामन्त्री? क्या हम झूठ बोल रहें हैं?
नहीं महाराज। आप झूठ नहीं बोल सकते, फिर भी महारानी से...
महाराज किसी गलत फहमी का शिकार हुए हैं, अब मैं इन्हें कैसे समझाऊं।
हां हम रानी से अवश्य पूछेंगे।
रानी रूपमति के कक्ष में-
रानी तुम्हारे कक्ष में जानवरों की हड्डियाँ कहां से आती हैं?
पता नहीं स्वामी। मैं पहरेदारों से पूछ चुकी हूँ, सख्त पहरा भी लगवा चुकी हूँ फिर भी नजाने कौन हड्डियाँ फेंक जाता है।
Scan & editing by Rahul Dubey


झूट बोलती हो तुम । तुम रूपमति के रूप में राक्षसी हो, तुम्हें जानवरों का मांस खाने का शौक है । मैं तुम्हे अपनी रानी के रूप में नहीं रखना चाहता ।
स्वामी ! आप यह क्या कह रहे है । मुझ पर इतना बड़ा इल्जाम कि मैं राक्षसी हूँ । नहीं स्वामी नहीं ।
तुम राक्षसी हो रूपमती । किसी दिन तुम मुझे भी मार कर खा जाओगी । मैं तुम्हे अब यहां नहीं रख सकता ।
ऐसा मत कहिये स्वामी, मैं आपके पाँव पड़ती हूँ । मुझे यहां से मत निकालिये ...।
मुझे सब का हित देखना है । चाहे रानी हो या प्रजा । राजा को सबके साथ एक जैसा न्याय करना होता है । मैं तुम्हे राज्य से बाहर निकालने का दण्ड देता हूँ ।
तभी चन्द्रमुखी ने कक्ष में प्रवेश किया-
महाराज ! इन्हें ऐसे राज्य के बाहर निकालने से खतरा बना रहेगा ।
मैं समझा नहीं चन्द्रमुखी ।


अगर इसको ऐसे ही छोड़ दिया जाएगा तो यह वन के सारे जानवर खा जाएगी और कभी यह इस राज्य के लिये भी खतरा बन सकती है।
तो क्या किया जाए?
इनकी आँखे निकाल ली जाए। तभी खतरा टल सकता है।
ठीक है चन्द्रमुखी। यह काम तुम ही करो।
राजा कक्ष से चला जाता है।
डायन! तूने मेरे स्वामी से मुझे अलग करवा दिया है। भगवान तुझे इसकी सजा देगी। तू तड़प-तड़प कर मरेगी।
अभी तो तेरे तड़पने का वक्त है रूपमति ... अन्तिम बार तू अपनी आँखो से अपना महल देख ले।
चन्द्रमुखी ने चाकू से रानी रूपमति की दोनों आँखे निकाल ली -
नहीँऽऽऽ
ही...ही...ही... अब तेरे जीवन में अंधेरा ही अंधेरा है रानी रूपमति। ही...ही...ही....


चन्द्रमुखी रानी रूपमति को रथ में बिठा कर जंगल में ले आई–
अगर यह जिन्दा रही तो मेरे लिये खतरा बन सकती है। इसे खत्म कर देना ही उचित रहेगा।
और एक अंधेरे कुएं में उसने रूपमति को ढकेल दिया–
ही…ही…ही… अब मैं राजा को अपने इशारे पर नचाऊंगी।
आईऽऽ
उस कुंए में परियाँ रहती थी–
तुम कौन हो?
इस कुंए में कैसे आ गिरी?
रानी रूपमति ने सारी बातें परियों को बता दी–
मुझे वह चुड़ैल चन्द्रमुखी यहां ढकेल गई है।
तो तुम रानी रूपमति हो!
तुम घबराओ मत… परियाँ तुम्हारी मदद करेगी।


परियों की रानी रूपमति को कुंए के बाहर ले आई और जादू की छड़ी से उसने कुंए के पास एक झोपड़ी बना दी –
Scan & editing by Rahul Dubey
रूपमति मैंने तुम्हारे लिये झोपड़ी बना दी है। तुम यहां रहो, तुम्हारी देखभाल परियाँ करेंगी।
मैं तुम्हारे उपकार का बदला कैसे चुकाऊँगी परियों की रानी ?
यह उपकार नहीं हमारा फर्ज़ है रूपमति, तुम्हारी आँखे राक्षसी चन्द्रमुखी के पास हैं, इसलिये मैं तुम्हारी आँखो की रोशनी वापस नहीं ला सकती...।
...लेकिन तुम चिन्ता मत करो, तुम्हारी कोख में पलने वाला राजा रुद्र-प्रताप का बेटा तुम्हारी आँखे वापस लाएगा।
मैं उस दिन के लिये सब दुख उठा कर जिन्दा रहूँगी।
उधर महल में –
चन्द्रमुखी मैं कई दिनों से सोच रहा हूँ कि मुझे दूसरा विवाह कर लेना चाहिये।
आप ठीक सोच रहे हैं महाराज। आप दूसरा विवाह कर लीजिये।
क्या तुम मुझसे विवाह करोगी चन्द्रमुखी?


महाराज मैं गरीब और बेसहारा हूँ आपने मुझे सहारा दिया है इसलिये मैं आपकी बात को नहीं काट सकती।
तो फिर मैं विवाह की तैयारी करवाता हूँ।
राजा रूद्रप्रताप चन्द्रमुखी के साथ विवाह कर लेते हैं-
आज मेरी इच्छा पूरी हो गई।
चन्द्रमुखी रानी बन कर महलों का सुख भोगने लगी-
उधर रानी रूपमति ने एक पुत्र को जन्म दिया-
रानी रूपमति! तुम्हें चाँद सा बेटा हुआ है!
परियों की निगरानी में रूपमति का पुत्र पलने लगा-


परियों की रानी ने उसका नाम राहुल रखा। जब वह सोलह साल का हुआ –
मां अब मैं बड़ा हो गया हूं। रोज जंगल से पक्षी पकड़ कर नगर में बेचा करूंगा।
मुझे डर लगता है बेटे.... जंगल में खुंखार जानवर रहते हैं।
तेरा आर्शि-वाद मेरे साथ है माँ! मुझे कुछ नही होगा।
तो जा बेटा, मेरा आर्शिवाद तेरे साथ है।
राहुल जंगल में तीतर-बटेर पकड़ता –
और नगर में बेच आता –
यह तीतर-बटेर कितने में दोगे बेटे?
आप स्वयं उचित दाम दे दीजिये!
लो एक स्वर्ण मुद्रा और पिंजरा यहा छोड दो।
जी!


राहुल ने लौट कर वह स्वर्ण मुद्रा अपनी मां की हथेली पर रख दी –
मां, यह एक स्वर्ण मुद्रा है, मेरी पहली कमाई।
एक दिन चन्द्रमुखी की नजर राहुल पर पड़ी –
ओह! कितना खूबसूरत लड़का है!
चन्द्रमुखी ने ताली बजाई, तुरन्त एक दासी कक्ष में हाजिर हो गई –
क्या हुक्म है रानी जी?
वह पक्षी बेचने वाले लड़के को यहां बुला कर लाओ।
तुम्हें महारानी ने बुलाया है। चलो।
क्यों?
वह तुमसे पक्षी खरीदना चाहती हैं!
ठीक है चलिये।


महल में पहुँच कर -
प्रणाम महारानी जी !
तुम यह पक्षी कहां से पकड़ कर लाते हो बेटे ?
जंगल से महारानी जी !
देखो मैं तुमसे रोज तीतर-बटेर खरीदूंगी। तुम जो भी तीतर-बटेर पकड़ो मुझे देकर जाया करो।
ठीक है महारानी जी। लीजिये मेरे पास आज यही तीतर-बटेर है।
यह लो पाँच स्वर्ण मुद्राएं !
राहुल के जाने के बाद चन्द्र मुखी सोच में डूब गई।
यह लड़का एकदम रूपमति जैसा है कहीं यह रूपमति का बेटा तो नहीं है ?
... नहीं.. नहीं... रूपमति को तो मैंने स्वयं अपने हाथ से कुएं में ढकेला था। वह तो मर गई होगी, यह रूपमति का बेटा नहीं हो सकता।


दूसरे दिन जब राहुल महल में पक्षी लेकर पहुँचा -
बेटे क्या नाम है तुम्हारा ? क्या तुम्हारे पिता नहीं हैं जो तुम इतनी सी उम्र में पक्षी बेचने लगे ?
मेरा नाम राहुल है। मेरे पिता नहीं है। मेरी माँ है वो अंधी है। उसका नाम रूपमति है।
ओह! रूपमति!
अच्छा बेटे तुम कहां रहते हो ?
हम जंगल में कुंए के पास रहते हैं महारानी जी।
चन्द्रमुखी का चेहरा पीला पड़ गया। वह बुरी तरह घबरा गई -
रूपमति जिन्दा कैसे बच गई ?
तुम जाओ राहुल। तुम्हारी मां तुम्हारा इन्तजार कर रही होगी।
जी अच्छा!


चन्द्रमुखी ने अपनी विश्वास पात्र दासी को बुलाया -
कमली तुम पक्षी बेचने वाले लड़के का पीछा करो और देखो कि उसकी मां कौन है ?
अच्छा महारानीजी !
कमली, राहुल का पीछा करने लगी -
यह जंगल में कहां जा रहा है ?
कुएं के पास बनी झोपड़ी में राहुल घुसा तो कमली झोपड़ी की खिड़की पर आ खड़ी हुई -
मां... मां... वहां की रानी बहुत अच्छी है। मेरे सारे पक्षी रानी खरीद लेती हैं और मुझे उचित स्वर्ण मुद्रा देती हैं।
ओह! क्या तू महल में गया था ?
हां मां! रानी ने तो आज तुम्हारे विषय में भी पूछा था।
बेटे तू आज के बाद महल में नहीं जाएगा।
क्यों मां ?
बेटे राहुल वह रानी नहीं डायन है। उसने ही मेरी यह दशा की है ... वह तेरी जान ले लेगी बेटे।


मैंने कहा न मां, मैं तेरा बहादुर बेटा हूं। तू मेरी चिन्ता मत कर, मुझे कुछ नहीं होगा।
ओह! यह तो रानी रूपमति है।
महल में लौट कर कमली ने चन्द्रमुखी को बताया-
महारानी जी! वह लड़का रानी रूपमति का है। रूपमति जिन्दा है।
ओह! तो मेरा सन्देह ठीक निकला।
कमली के जाने के बाद-
मुझे अब रूपमति के साथ उसके लड़के को भी खत्म करना होगा.. वरना वह दोनों किसी भी समय मेरे लिये मुसीबत खड़ी कर सकते हैं।
दूसरे दिन राहुल जब पक्षी लेकर महल में आया-
प्रणाम महारानी जी, मैं आज बहुत सारे पक्षी लाया हूँ।
ओह! सांपिन का बेटा! आज इसे जाल में फंसाती हूँ।
राहुल अगर तुम मेरा एक काम कर दो तो मैं तुम्हें सोने की दस मोहरे दूंगी।
काम बताइये महारानी जी मैं अवश्य करूंगा।


जंगल के अन्तिम छोर पर लाल पहाड़ है। उसके पीछे मेरी मां का महल है। तुम्हें एक पत्र उन तक पहुँचाना है।
ठीक है। आप मुझे पत्र दें। मैं कल सुबह ही चला जाऊंगा।
चन्द्रमुखी ने पत्र राहुल को दे दिया –
इस पत्र को जरा सावधानी से पहुँचाना है राहुल।
अच्छा!
राहुल पत्र लेकर लाल पहाड़ की तरफ चल पड़ा –
उफ! दोपहर होने को आयी है, गर्मी से भी बुरा हाल है। क्यों न थोड़ा विश्राम कर लूं।
राहुल एक वृक्ष के नीचे लेट गया। उसे शीघ्र ही नींद आ गई –
खर्र... खर्र...


उसी जंगल के रास्ते से शंकर - पार्वती चले जा रहे थे। पार्वती की नज़र राहुल पर पड़ी तो उनका मन करुणा से भर उठा -
स्वामी ! देखिये इतनी भीषण गर्मी में यह बालक इस जंगल में लेटा हुआ है।
थक गया होगा प्रिय। आराम कर रहा है।
आप तो अन्तर्यामी हैं स्वामी। आप तो समझ ही गये होंगे कि यह बालक किसी भयानक षड़यन्त्र का शिकार होने जा रहा है।
दुख: सुख तो पृथ्वी के इन्सानों के साथ जुड़ा हुआ है प्रिय। इस पर ध्यान मत दो; चलो हमें देर हो रही है।
नहीं स्वामी, इस बालक को तो संकट से उबारना ही होगा।
तुम्हारा हृदय बहुत कोमल है प्रिय, अब तुम्हारे लिये मुझे इसका भी कष्ट निवारण करना पड़ेगा।
शंकर - पार्वती भेष बदल कर राहुल के पास आए -
उठो बेटे ! तुम्हे कहां जाना है ?


प्रणाम बाबा। मैं चन्द्रमुखी की माँ के पास यह पत्र लेकर जा रहा हूँ।
क्या यह पत्र हमें दिखाओगे?
अवश्य बाबा! यह लीजिये!
लाओ!
वृद्ध बने शंकर भगवान ने वह पत्र लेकर पढ़ा-
माँ सुर्पा प्रणाम! यह रानी रूपमति का पुत्र है। इसे समाप्त कर देना ताकि राजा रुद्र-प्रताप का राज-सिंहासन पाने का रास्ता साफ हो सके।
तुम्हारी बेटी कनकटी!
ओह! मुझ से इतना बड़ा धोखा!
भगवान शंकर ने उस पत्र को बदल दिया।
अब सुर्पा राक्षसी तुम्हे चन्द्र-मुखी का बेटा समझेगी! जाओ बेटा!
राहुल पत्र लेकर अपनी मंजिल की तरफ चल पड़ा-


लम्बा सफर तय करके राहुल सुर्पा के महल तक पहुँच गया। दरवाजे पर एक राक्षस खड़ा पहरा दे रहा था-
मुझे रानी चन्द्रमुखी की मां सुर्पा से मिलना है। उनके लिये मैं एक पत्र लेकर आया हूं।
चलो अन्दर।
महल के अन्दर जब सुर्पा ने वह पत्र पढ़ा तो खुशी से उसने राहुल को अपने सीने से लगा लिया-
अरे! मेरी कनकटी को पुत्र हुआ और वह इतना बड़ा भी हो गया। यह बात मुझे कनकटी ने कभी बताई ही नहीं। मेरा नाती!
यह कनकटी कौन है नानी?
अरे! कनकटी तेरी मां का असली नाम है। राजा रूद्र-प्रताप को जाल में फंसा कर वह रानी बनी है।
अब वह दिन दूर नहीं है जब कनकटी राजा को मार कर राज्य पर कब्जा कर लेगी। तब हम खूब मौज उड़ायेंगे।
वो दिन कभी नहीं आएगा सुर्पा!
तेरी मां ने पत्र में लिखा है कि मैं तुझे अपने पास ही रखूं। तू बैठ मैं तेरे लिये खाना लाती हूं।
अच्छा नानी!


सुर्पा के जाते ही दो भयानक शक्ल वाले राक्षसों ने महल में प्रवेश किया–
मनुष्य गंध !
हा..हा..हा... आज तो महल में कोई मनुष्य घुस आया है, आज का भोजन....
राहुल पर नजर पड़ते ही खर-दुषण उस पर झपटे–
..बड़ा ही स्वादिष्ट रहेगा...
इसके नर्म मुलायम गोश्त का स्वाद पहले मैं चखूंगा !
ठहरो दुष्टो ! किसे शिकार बना रहे हो... यह तो तुम्हारी बहन कनकटी का पुत्र है, तुम्हारा भांजा !
?
?
प्रणाम मामा जी !
जीते रहो भांजे ! मां न बताती तो अनर्थ हो जाता !
हमारा लाड़ला भांजा !

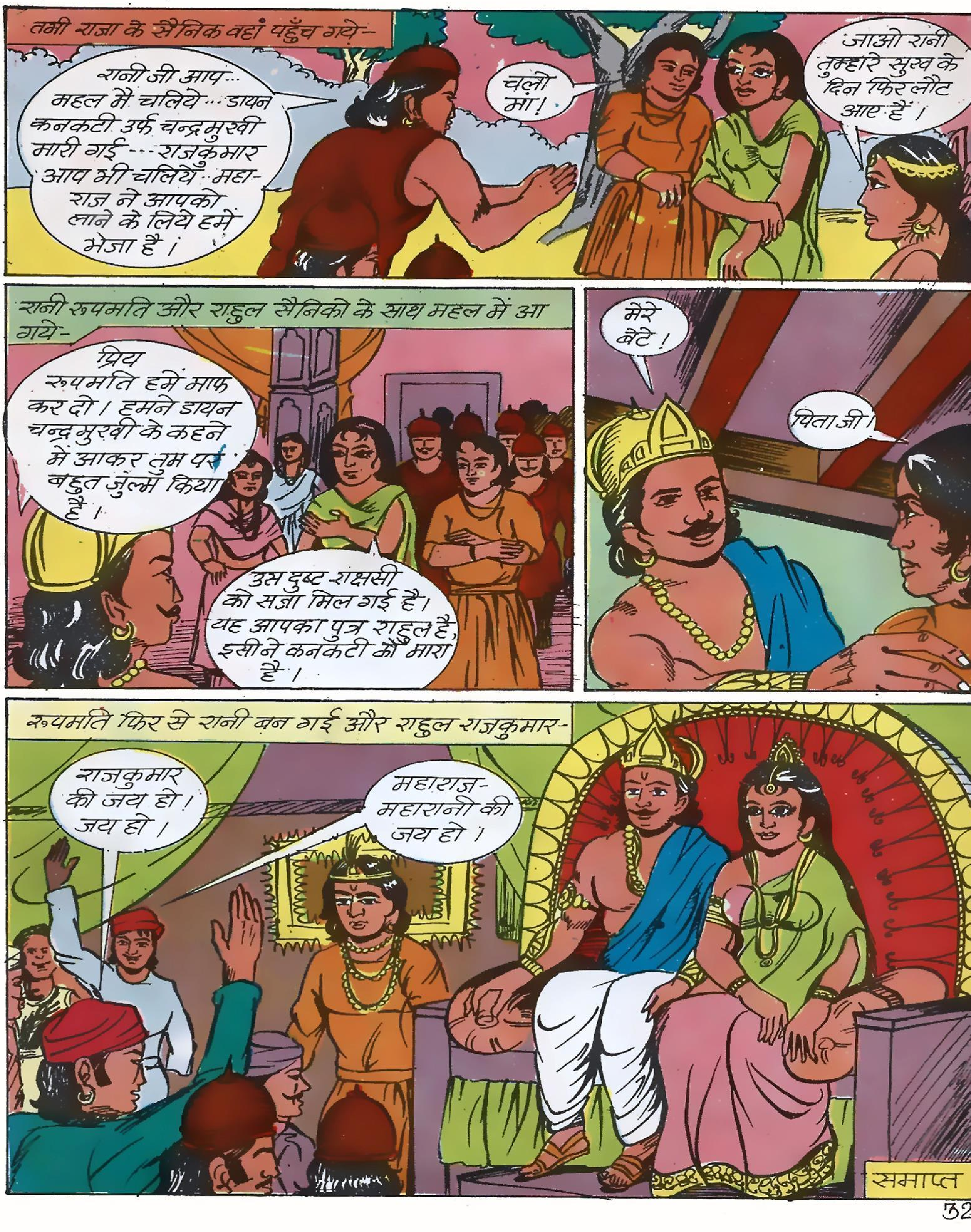

मां हम अपने भांजे के लिये जंगल से बढ़िया शिकार लेकर आते हैं।
सुर्पा राहुल को महल में घुमाने ले गई-
नानी! हमें यह डंडा दो न खेलने के लिये।
नहीं बेटे। इसमें तुम्हारे मामा के प्राण हैं।
मामा के प्राण हैं इस डंडे में, फिर तो मैं इसे नहीं लूंगा.. मुझे दोनो मामा प्यारे लगते हैं नानी।
ही...ही...ही... तू बहुत भोला है। तेरी मां कनकटी तो बहुत चालाक है बेटे।
नानी जब हम वापस जाएंगे तो अपने साथ यह पिंजरा अवश्य लेजाएंगे।
नहीं बेटे, इस तोते में तेरी मां के प्राण हैं इसे छेड़ना भी मत।
ओह! नानी फिर तो तुम्हारे प्राण भी किसी जानवर में होंगे?
नहीं। मेरे प्राण जानवर में नहीं, इस झाड़ू में हैं।


नानी इस डिब्बिया मे क्या है ?
इसमें रूद्रप्रताप राजा की पहली रानी रूपमति की आँखे हैं। कनकटी ने उसकी आँखे निकाली थी।
ओह! मेरी माँ की आँखे है... परियों की रानी कहती थी। यदि माँ की आँखे चन्द्रमुखी के कब्जे से वापस लाई जाए तो माँ देख सकेगी।
तभी दोनों राक्षस खर-दुषण वापस आ गये-
भांजे! देखो हम तुम्हारे लिये हिरण का शिकार लेकर आए हैं।
मामा हम मांस नहीं खाते। महल में हमें खाने को पकवान मिलते हैं। हमें पकवान ही अच्छे लगते हैं।
ओह! फिर तो हम तुम्हारे लिये पकवान ही बनाऐंगे।
मां कल भांजे के लिये पकवान बनाना।
ठीक है।
दूसरे दिन जब दोनों मामा खर-दुषण शिकार पर चले गये-
नाती! हम तुम्हारे लिये पकवान बनाते है तुम खेलो।
अच्छा नानी!

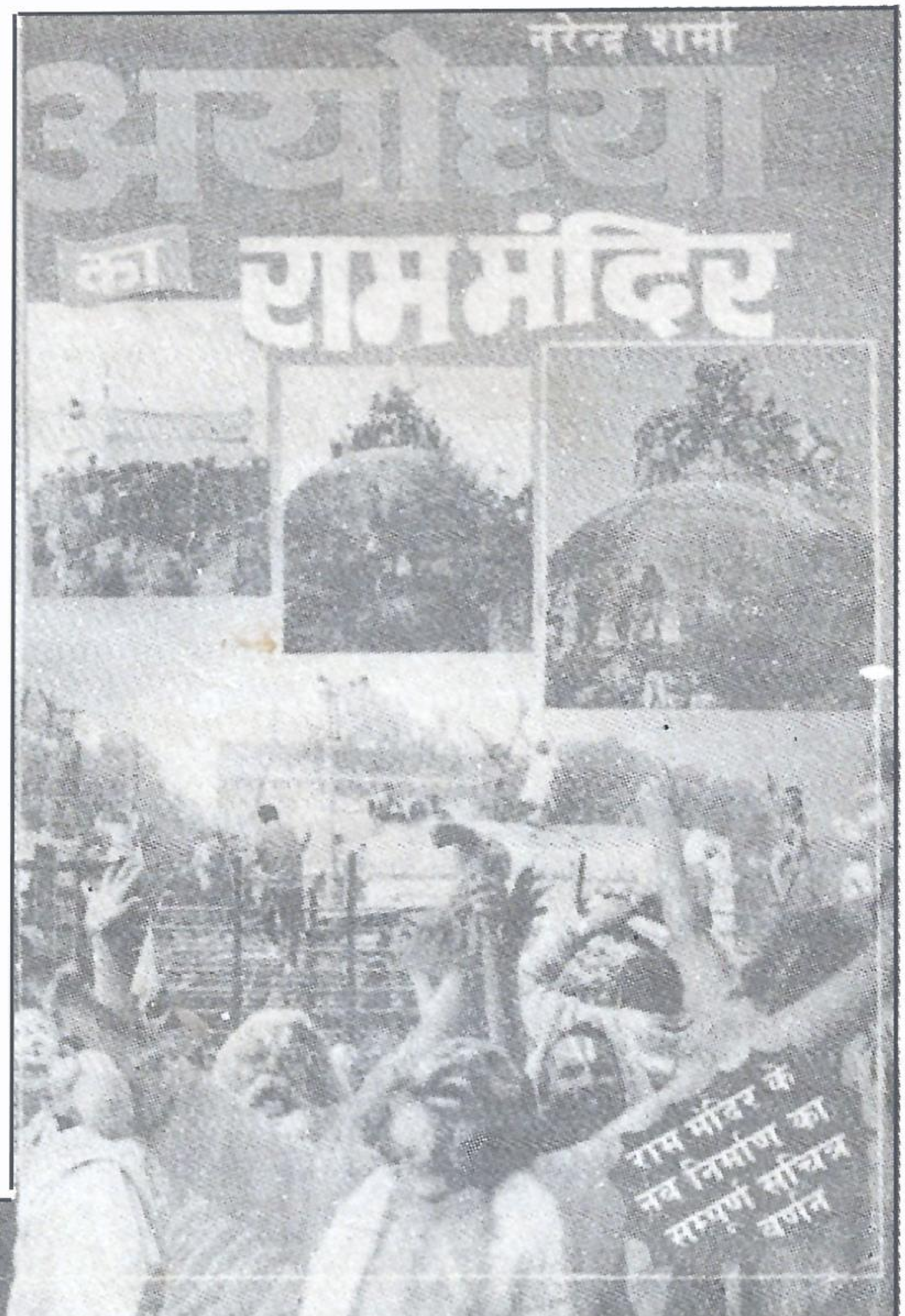

सुर्पा खाने बनाने में लग गई , तब-
अपनी मां का बदला लेने का यही मौका है ।
राहुल ने वह डंडा उठा लिया , जिसमें खर दुषण के प्राण कैद थे
खर-दुषण यह हुए डंडे के टुकड़े ।
कड़ाक
उधर खर-दुषण के शरीर भी दो हिस्सो में फट गये-
नहीं ऽऽऽ
आऽऽहऽऽ
फिर राहुल झाड़ू उठा कर सुर्पा के पास आया-
अरे, नाती ! यह झाड़ू रख दे... इसे क्यों उठा लाया तू... रख दे इसे वहीं ।
इसे मैं आग में झोकूंगा नानी ।
नहीं...आह आग ऽऽ आग


सूर्पा राक्षसी आग की लपटों में जल कर राख हो गई-....
...तब राहुल ने अपनी माँ की आँखों वाली डिब्बिया उठा कर अपने पास रख ली-
जिस तोते में चन्द्रमुखी के प्राण थे, उसे लेकर राहुल वापस चल दिया-
Scan & editing by Rahul Dubey
राजमहल पहुँच कर उसने तोता पिंजरे से निकाल लिया-
अरे! यह लड़का मेरी मां की चंगुल से कैसे बचकर आ गया और यह तोता....
इस तोते में तेरे प्राण हैं कनकटी तूने मेरी मां को महलों से निकाला था, आज मैं तेरी लाश महलों से फिकवाऊंगा।
राहुल ने तोते की टांगे तोड़ दी उसके ऐसा करते ही चन्द्रमुखी मुंह के बल गिरी-
डायन यह गई तेरी टांगे।
आ ऽऽऽ मुझे मत मारो।


राहुल ने जैसे ही तोते की गर्दन मरोड़ी। चन्द्रमुखी की गर्दन टूट गई। मरते ही वह कनकटी राक्षसी के रूप में बदल गई-
अरे! रानी चन्द्रमुखी राक्षसी!
यह खबर आग की तरह फैली। राजा रुद्रप्रताप दौड़ कर आए-
अरे! राक्षसी... ओह, समझा तो राक्षसी यह थी... रूपमति नहीं...
जिस लड़के ने इसे मारा है उसे तलाश करो।
सैनिक राहुल की तलाश में दौड़े, उधर-
कहां गये थे बेटे राहुल?
मां मैंने चन्द्रमुखी यानि कनकटी राक्षसी को मार डाला है यह रही तुम्हारी आँखे।
परियों की रानी ने वह आँखे रूपमति की आँखो वाली खाली जगह में लगा कर जादू की छड़ी घुमा दी-
ओह! मैं देख सकती हूं... राहुल... मेरे बेटे!
मां!


तभी राजा के सैनिक वहां पहुँच गये-
रानी जी आप... महल में चलिये... डायन कनकटी उर्फ चन्द्रमुखी मारी गई--- राजकुमार आप भी चलिये महाराज ने आपको लाने के लिये हमें भेजा है।
चलो माँ!
जाओ रानी तुम्हारे सुख के दिन फिर लौट आए हैं।
रानी रूपमति और राहुल सैनिकों के साथ महल में आ गये-
प्रिय रूपमति हमें माफ कर दो। हमने डायन चन्द्रमुखी के कहने में आकर तुम पर बहुत ज़ुल्म किया है।
उस दुष्ट राक्षसी को सज़ा मिल गई है। यह आपका पुत्र राहुल है, इसी ने कनकटी को मारा है।
मेरे बेटे!
पिता जी!
रूपमति फिर से रानी बन गई और राहुल राजकुमार-
राजकुमार की जय हो। जय हो।
महाराज-महारानी की जय हो।
समाप्त

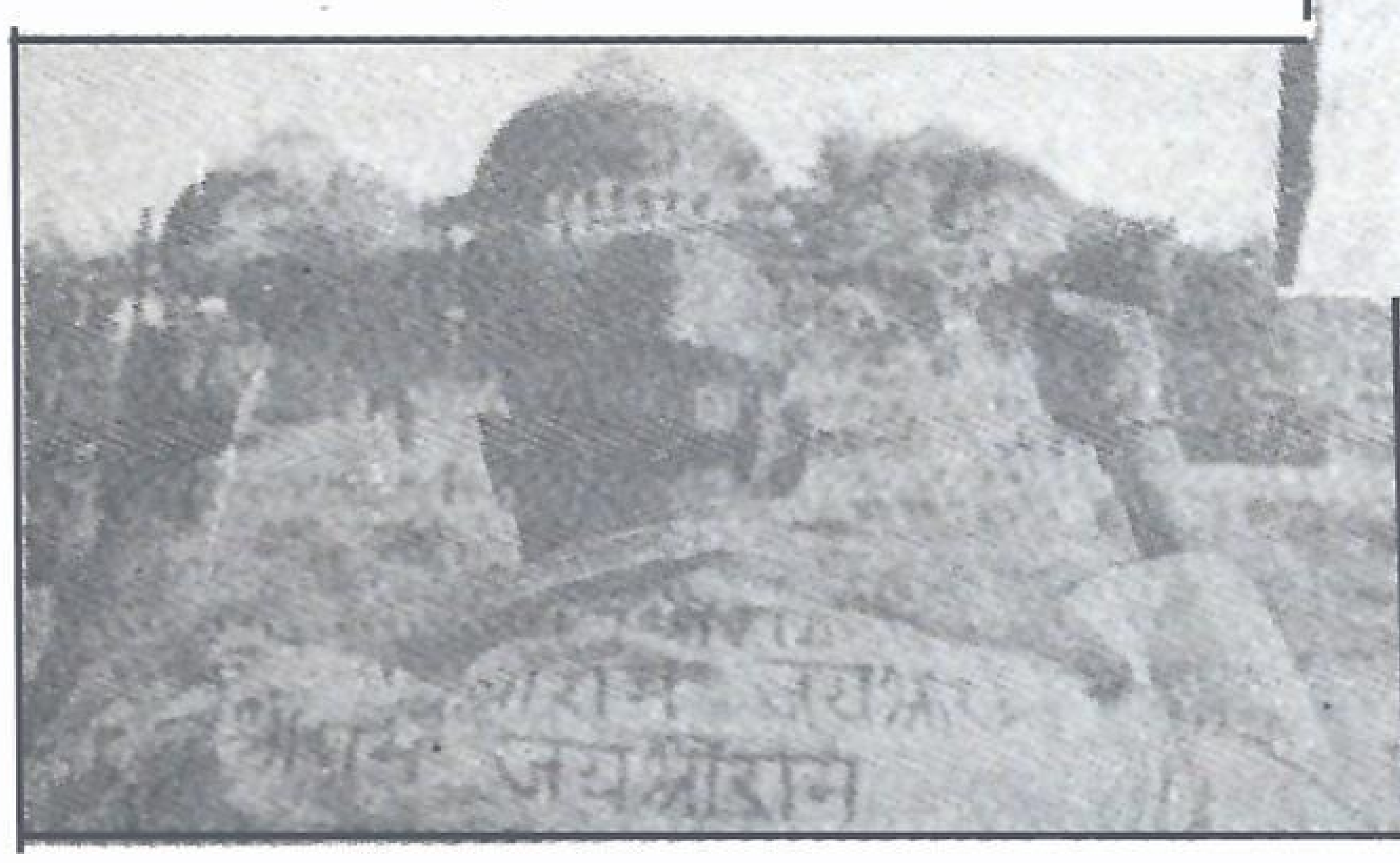




६ दिसम्बर, १९९२ को अयोध्या में क्या हुआ? क्या राम मंदिर बन गया या बाबरी मस्जिद हट गई? या फिर मंदिर और मस्जिद ने हजारों बेगुनाहा इन्सानों की जानें ले लीं।

देश के पथ भ्रष्ट नेताओं की राजनीति ने सारे देश में एक ऐसी भंयकर आग लगा दी, जिसमें हमारा राष्ट्र जल रहा था, जनता जला रही थी।

यदि राष्ट्र नहीं होगा तो पूजा स्थल कहां रहेंगे? यदि लोग ही नहीं होंगे तो पूजा कौन करेगा? ऐसे हजारों प्रश्नों का उत्तर आपको इस पुस्तक में मिलेगा।



विशेष नोट :-

इस पुस्तक में 176 पेज हैं, जिसमें 16 पेज सतरंगी तस्वीरें हैं तथा बढ़िया कागज, बढ़िया छपाई है।

इसमें सन 1526 ई० बाबर के समय से आज तक का पूरा विवरण है।

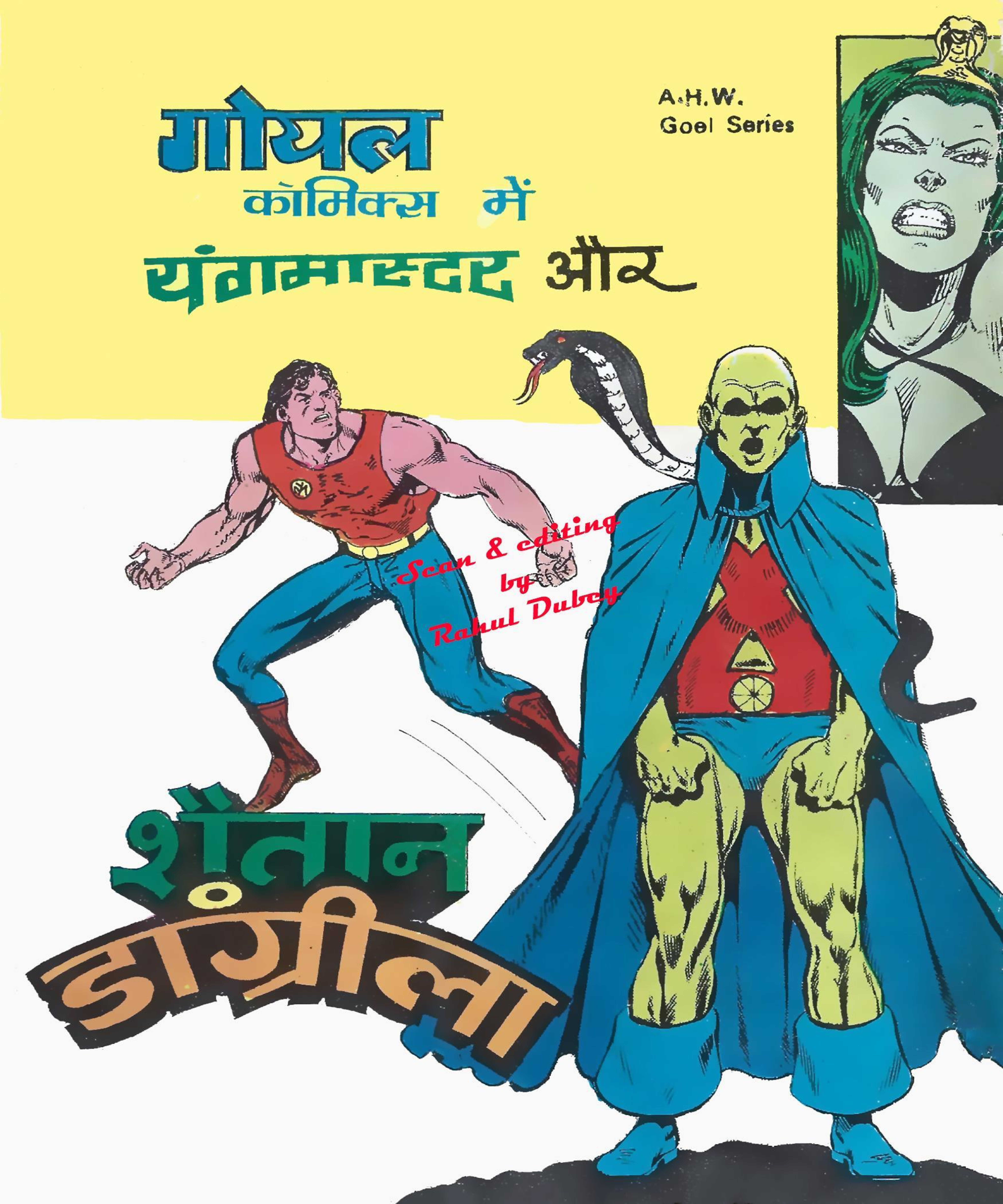
कृपया अपना बहुमूल्य आर्डर शीघ्र भेजें।

मूल्य - 20/- रु०

प्रकाशक :- रोशनी पॉकेट बुक्स, दिल्ली-

मुख्य वितरक :- गोयल पॉकेट बुक्स

91, बापू मार्किट, जुबली सिनेमा के सामने, फव्वारा, दिल्ली-110006


गोयल
कॉमिक्स में
यंगमास्टर और
A.H.W.
Goel Series
Scan & editing
by
Rahul Dubey
शैतान
डांग्रीला